तूफान का
आना भी
जरूरी है तभी पता
चलता है कौन हाथ
पकड़ता है और कौन
छोड़ता है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून गुरूवार 3 सितंबर 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

यह सवाल बना ही रहा

बावजूद इसके, यह सवाल बना ही रहा कि इससे पार्टी को मिला क्या। बैठक के अंत में सोनिया गांधी 'आहत होने के बावजूद' थोड़े और समय तक अंतरिम अध्यक्ष बने रहने के लिए मान गईं। जाहिर है, सारे जरूरी सवाल ज्यों के त्यों अपनी जगह पड़े हैं।

जीवन सनवाल।।

कांग्रेस के 23 वरिष्ठ नेताओं द्वारा पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी को लिखे गए पत्र के कारण सोमवार को हुई कांग्रेस वर्किंग कमिटी की बैठक पार्टी के हालिया इतिहास का सर्वाधिक गरमा–गरमी वाला आयोजन बन गई। बावजूद इसके, यह सवाल बना ही रहा कि इससे पार्टी को मिला क्या। बैठक के अंत में सोनिया गांधी 'आहत होने के बावजूद' थोड़े और समय तक अंतरिम अध्यक्ष बने रहने के लिए मान गईं।

बड़े फैसलों के लिए छह महीने में ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी की बैठक बुलाई जाएगी। तब तक सोनिया गांधी बतौर अंतरिम अध्यक्ष पार्टी चलाती रहेंगी। जाहिर है, सारे जरूरी सवाल ज्यों के त्यों अपनी जगह पड़े हैं, हालांकि कांग्रेस में सार्वजनिक रूप से सवाल उठना भी कोई कम बड़ी बात नहीं है। ओल्ड गार्ड वर्सेज न्यू गार्ड के विवाद के बीच इस सवाल का कोई जवाब ढूंढना आज भी पहले जितना ही मुश्किल है कि क्या राहुल गांधी साल भर पहले अध्यक्ष पद से दिए गए अपने इस्तीफे पर पुनर्विचार करने को राजी होंगे, और हो भी गए तो क्या पूरी पार्टी उन्हें मन से स्वीकार कर पाएगी?

इससे भी बड़ा सवाल यह है कि अगर मान–मनव्वल का कार्यक्रम सफल नहीं हुआ और बात गांधी परिवार से बाहर के किसी व्यक्ति को ही अध्यक्ष बनाने की ओर बढ़ी तो क्या हर राज्य में कम से कम दो गुटों में बंटे इन नेताओं के बीच से पार्टी के शीर्ष पद के लिए कोई एक सर्वमान्य नाम निकालना संभव होगा?

अगर किसी तरह यह हो पाया और उस नाम को पार्टी ने स्वीकार कर लिया तो इस नए नेतृत्व और उसके पीछे चलने वाली पार्टी के साथ गांधी परिवार का कैसा रिश्ता रहेगा? क्या उस स्थिति को यह स्वीकार कर पाएगा, और क्या पार्टी उसकी छत्रछाया के बिना फल–फूल पाएगी?

पिछली आधी सदी से कांग्रेस का जो हाल बना हुआ है उसे देखते हुए नेहरू–गांधी परिवार के बगैर कांग्रेस की कल्पना करना बहुत कठिन है। हालांकि कांग्रेस चाहे तो यह बीच का रास्ता निकाल सकती है कि नेहरू–गांधी परिवार को रोजमर्रा नेतृत्व की जिम्मेदारी से मुक्त रखकर उसकी छत्रछाया उसी तरह अपने ऊपर बनाए रखे, जैसे बीजेपी में सीधा दखल न होने के बावजूद उसके सिर पर आरएसएस का साया हमेशा नजर आता है। एक बात तय है कि दैवी नेतृत्व के पांच साल बाद झरोखा दर्शन देने वाली राजनीति के दिन अब लद चुके हैं।

बीजेपी ने इधर जो राजनीतिक शैली अपनाई है, उसके सामने राष्ट्रीय ही नहीं, प्रदेश स्तर पर भी किसी ऐसी पार्टी का खड़े रहना मुश्किल है जो राजनीति को सिर्फ चुनावों के संदर्भ में देखने की आदी हो। कांग्रेस को जिंदा रहना है तो उसे पार्टी मशीनरी को चुस्त–दुरुस्त और चौबीसों घंटे, बारहों मास सक्रिय रखने वाला नेतृत्व अपनाना होगा।

रही बात पार्टी से ऊपर एक सर्वमान्य चमत्कारिक व्यक्तित्व की तो इसके लिए एशिया में चेयरमैन और अयातुल्ला जैसी कितनी ही प्रायोगिक मिसालें मौजूद हैं, जिन्हें अपनाकर कांग्रेस अपने शीर्ष परिवार को संतुष्ट रख सकती है।

धन का सम्मान करें

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। बहुत से लोग कहते हैं कि धन से खुशी नहीं खरीदी जा सकती, लेकिन यह भी सच है कि धन के बगैर आम व्यक्ति खुश रह भी नहीं सकता। धन की अहमियत हमारे जीवन में बहुत ज्यादा है। धन का दुरपयोग भी किया जाता है।

निश्चित ही धन से आप खुशियां नहीं खरीद सकते, लेकिन कुछ सुविधाएं तो खरीद ही सकते हैं, जो आपको खुशी देते हैं। एक आइस्क्रीम खाने या फिल्म देखने से हमें खुशी मिल सकती है, लेकिन इसके लिए तो धन की जरूरत लगेगी ही।

ऐसे लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ती करने करने के लिए ही दुखी रहते हैं। क्योंकि ऐसे लोगों की एक इच्छा की पूर्ति के बाद दूसरी इच्छा पनपती है और जीवनपर्यंत यही चलता है।

संपादकीय

मोदी युग और कांग्रेस

2004 में शाइनिंग इंडिया के नारे के साथ चुनाव में उतरी अटलजी की सरकार सत्ता में वापसी नहीं कर पाती। वजह? तब तक सोनिया गांधी बतौर अध्यक्ष कांग्रेस को संभाल चुकी होती हैं। यह धारणा होती है कि कांग्रेस के सत्ता में आने पर वही प्रधानमंत्री होंगी। प्रधानमंत्री बनने की नौबत आई, तो वे नहीं बनीं, लेकिन लगातार दो चुनाव कांग्रेस जीतती गई। पहले चुनाव में भले मनमोहन चेहरा न रहे हों, लेकिन दूसरे चुनाव में वे लालकृष्ण आडवाणी पर भारी पड़े ही। उनकी सरकार के कई फैसले ऐसे थे, जिन्होंने बीजेपी के 'मजबूर प्रधानमंत्री बनाम मजबूत प्रधानमंत्री' के नारे को फेल कर दिया। बीजेपी अध्यक्ष बदलती रही। आडवाणी, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और एक बार फिर राजनाथ सिंह पर दांव लगाया। अंत में यह तय पाया कि कामयाबी हासिल करने के लिए किसी करिश्माई चेहरे को आगे करना ही होगा। यह खोज नरेंद्र मोदी पर आकर खत्म होती है। नरेंद्र मोदी वह चेहरा बनते हैं, जो लोकप्रियता के शिखर पर खड़े दिखाई देते हैं। पार्टी लगातार न केवल दो लोकसभा चुनाव जीतती है बल्कि अलग–अलग राज्यों में भी मोदी के नाम पर जीत दर्ज कराती चली आ रही है। यहीं से कांग्रेस का संकट खड़ा होता है। पार्टी की सारी जद्दोजहद राहुल गांधी को स्थापित करने को लेकर है। सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनना होता तो वे 2004 में ही बन गई होतीं। राहुल के लिए मुश्किल की घड़ी यह है कि उनका मुकाबला नरेंद्र मोदी से है। कद की लड़ाई में मोदी से वे मात खा जा रहे हैं। गांधी परिवार से हटकर भी देखा जाए तो कांग्रेस के पास कोई ऐसा चेहरा नहीं दिखता। यही बीजेपी के लिए इस वक्त खुशकिस्मती और कांग्रेस के लिए परेशानी का सबब है।

जिसकी पार्टी, वही अध्यक्ष। पार्टी भी वही बनाता है, जिसका अपना वोट बैंक होता है। पार्टी के दूसरे नेताओं को पता होता है कि अगर हम अध्यक्ष बन भी गए तो हमारे साथ वोट किसका होगा?

परिवर्तन का दौर

नदीम ।।

क्षेत्रीय पार्टियों को इस लिहाज से खुशकिस्मत माना जा सकता है कि उनके यहां 'अध्यक्ष' का बहुत झगड़ा नहीं होता। जिसकी पार्टी, वही अध्यक्ष। पार्टी भी वही बनाता है, जिसका अपना वोट बैंक होता है। पार्टी के दूसरे नेताओं को पता होता है कि अगर हम अध्यक्ष बन भी गए तो हमारे साथ वोट किसका होगा? क्षेत्रीय पार्टियों में नेतृत्व का झगड़ा अमूमन परिवार में ही होता है, लेकिन तब जब राजनीतिक विरासत संभालने का मौका आता है। यूपी में मुलायम सिंह यादव की राजनीतिक विरासत के लिए उनके बेटे और भाई के बीच टकराव हुआ। हरियाणा में चौधरी देवीलाल का परिवार भी इसी मुद्दे पर बंट गया। महाराष्ट्र में शरद पवार के परिवार में भी खींचतान चल ही रही है। तमिलनाडु में भी जयललिता के बाद उनकी करीबी शशिकला और पार्टी के दूसरे नेताओं के बीच लड़ाई देखी गई। कर्नाटक में एचडी देवगौड़ा के रहते हुए ही उनकी राजनीतिक विरासत के मालिक उनके बेटे कुमार स्वामी मान लिए गए हैं।

तमिलनाडु में डीएमके चीफ करुणानिधि के बाद उनके बेटे एमके स्टालिन को को लेकर परिवार में भी ज्यादा विवाद नहीं हुआ। पंजाब के अकाली दल में भी यही स्थिति रही। बिहार में राम विलास पासवान के बेटे ने भी पार्टी की बागडोर संभाल ली। लेकिन राष्ट्रीय पार्टियों की स्थिति बिलकुल अलग होती है। उन्हें अलग–अलग राज्यों और जातियों के बीच भी समन्वय बनाना पड़ता है। सबसे बड़ी जरूरत तो वहां उसे एक ऐसे चेहरे की होती है, जिसे वह चुनाव के मौके पर प्रधानमंत्री के रूप में पेश कर सके। कई मौकों पर 'रबर स्टैंप' अध्यक्ष तो चल जाता है, लेकिन प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का करिश्माई होना बहुत जरूरी होता है।

राष्ट्रीय दलों की इस मजबूरी को मार्केटिंग के फंडे से समझना ज्यादा आसान होगा। बड़े ब्रैंड वैल्यू वाली कंपनियां अच्छा प्रॉडक्ट तैयार करने के लिए जानी जाती हैं। उनके पास बड़े–बड़े शोरूम भी होते हैं, लेकिन शोरूम तक ग्राहकों को लाने के लिए उन्हें किसी न किसी मॉडल की जरूरत पड़ती है। कई बार ऐसा भी देखा गया कि प्रॉडक्ट के बेहतरीन होने के बावजूद वह इसलिए फेल हो गया कि उसकी सही मार्केटिंग नहीं हो पाई। सियासत भी मार्केटिंग के फंडे से चलती है। 1977 वह साल था, जब कांग्रेस पहली बार सत्ता से बाहर गई थी, और देश में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ था। वजह क्या थी? विपक्ष को जयप्रकाश नारायण जैसा एक ऐसा करिश्माई चेहरा मिल गया था, जिसने आजाद हिंदुस्तान में 'दूसरी आजादी' की कहानी लिख दी।

लोगों ने यह नहीं देखा कि जनता पार्टी का अध्यक्ष कौन है या जनता पार्टी की ओर से पीएम का उम्मीदवार कौन है? जेपी जनता पार्टी के पर्याय बन गए थे। इसके बाद नब्बे का दशक आता है। लोगों को वीपी सिंह में करिश्मे की उम्मीद दिखने लगती है। नारा बनता है– 'राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है।' वीपी के जरिए अलग–अलग राज्यों के क्षत्रपों के गठजोड़ से तैयार जनता दल सत्ता में आ जाता है। चंद्रशेखर, देवगौड़ा और इंद्रकुमार गुजराल भी प्रधानमंत्री बने, लेकिन करिश्माई व्यक्तित्व के सहारे नहीं, बल्कि जोड़ तोड़ की तात्कालिक व्यवस्था के जरिए। यही वजह थी कि इनके कार्यकाल ने साल भी पूरे नहीं किए। 1980 में बनी बीजेपी राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा में नब्बे के दशक में राम मंदिर आंदोलन के जरिए आती है।

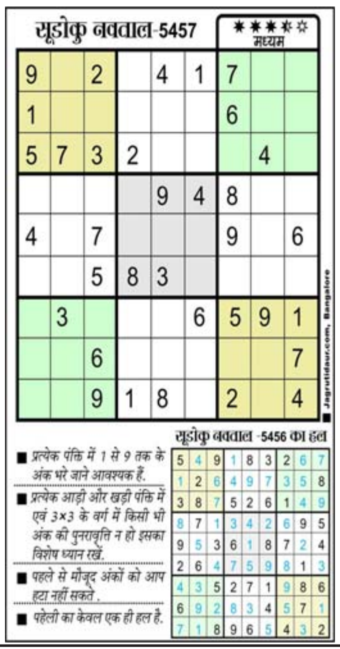

सूडोकु नवताल-5457

मध्यम

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5456 का हल

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2

अपना ब्लॉग

उनकी 'शहादत' को मत भूलना

मोहन। ऐसे सहिष्णु, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न उन्होंने देखा था, जिन्होंने हमारी 'आजादी' के लिए अपनी 'शहादत' दे दी। एक बात और, यहां शहादत का अर्थ सिर्फ देहत्याग से नहीं है और ना ही आजादी का मतलब उस तथाकथित स्वतंत्रता से है जो हमें 15 अगस्त 1947 को मिली थी। अपने मन को शांत करके एक बार सोचिए, सबसे निचले स्तर तक जाइए, सोचिए आपके घर में किसने अपने सुखों की 'शहादत' देकर आपको इतना बेहतर जीवन जीने की आजादी दी कि आप इस ब्लॉग को 'पढ़' पा रहे हैं। सोचिए! आपके स्कूल में किस शिक्षक ने आपकी लाख कमियों और नखरों के बावजूद अपने 'अहंकार' की शहादत देकर आपको लगातार सिखाने की कोशिश की और आज जब आपकी अच्छी कैल्कुलेशन, या शुद्ध हिंदी या अच्छी राइटिंग की तारीफ होती है, तो शायद उसे याद भी नहीं करते। सोचिए!

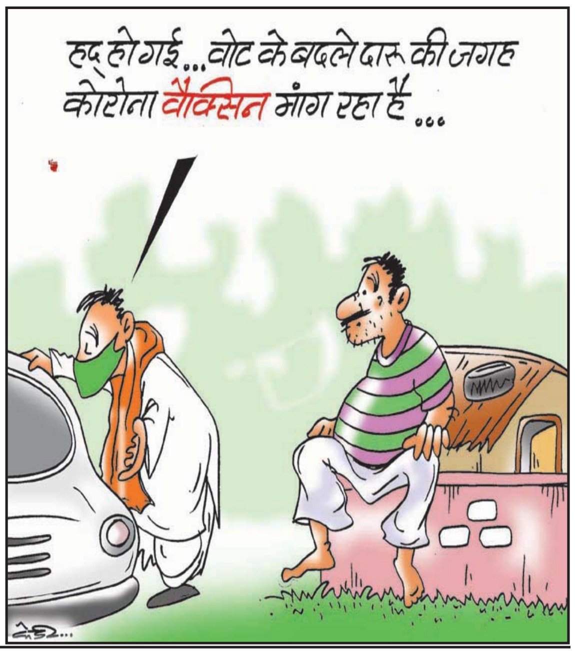
हद हो गई...वोट के बदले दारू की जगह कोरोना वैक्सिन मांग रहा है...